भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 465
बुधवार, 6 दिसंबर, 2023 को उत्तर दिए जाने के लिए

लू का प्रभाव

† 465. श्री. रवनीत सिंह:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या गत एक वर्ष के दौरान पांच दिनों या उससे अधिक समय तक उच्च तापमान, विशेषकर लू का अनुभव करने वाली आबादी की सूची में भारत शीर्ष स्थान पर है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसके कारण क्या हैं;

(ग) क्या सरकार ने लगातार पड़ने वाले लू के संभावित प्रभाव के संबंध में कोई आंकलन किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या सरकार देश में लंबे समय से तापमान में वृद्धि को विशेषकर लू की घटनाओं को कम करने के लिए कोई उपाय कर रही है; और

(ङ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर
पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(श्री किरेन रीजीजू)

(क) से (ख) उष्णदेशीय देश होने के कारण, भारत में लू की स्थिति का खतरा रहता है। सामान्य तौर पर, उत्तर और मध्य भारत और उत्तरी प्रायद्वीपीय भारत में हर साल मार्च से जून के दौरान लू का अनुभव होता है। गर्मी के मौसम में इन क्षेत्रों में आम तौर पर 4-8 दिनों तक लू की स्थिति बनी रहती है। ये आँकड़े 1961-2020 की अवधि के आंकड़ों पर आधारित हैं। हालाँकि, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम राजस्थान, पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, विदर्भ, ओडिशा, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में एक वर्ष में 8 दिनों से अधिक लू का अनुभव होता है। मौसम विज्ञान उप-मंडल में मार्च-जून 2023 के सीज़न के दौरान सबसे अधिक लू गांगेय पश्चिम बंगाल, बिहार, तटीय आंध्र प्रदेश और यनम, ओडिशा में रही जिनमें क्रमशः 34, 31, 21 और 18 दिन लू के रहे।

(ग) यह सच है कि, वैश्विक स्तर पर वार्षिक तापमान बढ़ रहा है और इसका प्रभाव भारत सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लू में वृद्धि के रूप में दिखाई पड़ रहा है। आईएमडी विभिन्न स्थानिक और लौकिक पैमानों पर लू सहित विषम मौसम की घटनाओं से संबंधित पूर्वानुमान और चेतावनियां जारी करता है और इसे जनता के साथ-साथ आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों के साथ साझा करता है ताकि आवश्यक शमन उपाय शुरू किए जा सकें। इसके अलावा, आईएमडी ने हाल ही में प्रभाव आधारित पूर्वानुमान (IBF) जारी करना शुरू कर दिया है, जो यह बताता है कि मौसम कैसा होगा, के बजाय मौसम क्या करेगा। इसमें विषम मौसम तत्वों से अपेक्षित प्रभावों का विवरण और आम जनता के लिए प्रतिकूल मौसम के संपर्क में आने पर 'क्या करें और क्या न करें' के बारे में दिशानिर्देश शामिल हैं।

(घ) से (ङ) आईएमडी ने निगरानी में सुधार और समय पर पूर्व चेतावनी देने के लिए कई कदम उठाए हैं जिससे जान-माल के नुकसान को कम करने में मदद मिली है। इसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

i. तापमान और लू की स्थिति के मौसमी, मासिक और विस्तारित-अवधि के पूर्वानुमान प्रस्तुत करना।
ii. जिला स्तर पर लू की स्थिति का प्रभाव आधारित पूर्वानुमान
iii. भारत में लू सुभेद्यता एटलस जिससे राज्य सरकार के प्राधिकरणों और आपदा प्रबंधन एजेंसियों को योजना बनाने और उचित कार्रवाई करने में मदद मिल सके।
iv. भारत में गर्म मौसम से उत्पन्न जोखिम का विश्लेषण, जिसमें दैनिक तापमान, हवाएं और आर्द्रता की स्थिति शामिल हैं
v. पूरे देश के लिए लू सूचकांक पूर्वानुमान
vi. वेब-जीआईएस प्लेटफॉर्म पर रियल में लू की जानकारी और चेतावनियां
vii. राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से 23 राज्यों में संयुक्त रूप से हीट एक्शन प्लान (HAPs) क्रियान्वित किए गए
viii. समय पर सार्वजनिक पहुंच के लिए प्रसार प्रणालियों के आधुनिक माध्यमों का उपयोग करते हुए चेतावनी प्रसार सेवाओं में सुधार

******